WWW.NAYIGOONJ.COM
GOONJNAYI@GMAIL.COM

मार्च 2023

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका
नई गूँज

- गजल
- रंगोत्सव लेख
- करण अर्जुन संवाद कविता
- सफ़ेद पोश अपराध निबंध

9785837924

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2023

अंक 3

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

वरिष्ठ परामर्श दाता तथा पब्लिक ऑफिसर

सीमा धमेजा

डायरेक्टर

प्रज्ञा इंस्टीट्यूट जयपुर

Praggyainstitutejpr@gmail.com

9351177710

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

सम्पादकीय

रंग विरंगे हम

शिवा स्वयं

त्यौहार पर ये रंग बाहर दिखाई देते हैं | हम रंगीन, कहीं से लाल, कहीं से पीले |

रंगों से बहुत ख़ुशी मिलती है, क्या रोज़ त्यौहार की तरह नहीं हो सकते हम?

ख़ुशी के रंगों से खुद क़ो भरे हुए

सफ़ेद जैसी शांति हो मन में, लाल जैसी अग्नि कुछ कर गुजरने की, पीले जैसी धीरता और हरे जैसी प्रगति |

रंग तो हर साल कुछ सिखाने आते हैं और हम बस रंग पोत कर, रंग धो लेते हैं और फिर से बन जाते हैं स्लेटी रंग के | साथ साथ वो सीख भी धो देते हैं, जो हमें ये त्यौहार सिखाने आते हैं |

कभी दियों की झिल मिल और कभी रंग ही रंग | कभी जी भर कर सफाई और कभी जी भर कर गन्दा होना मतलब तरह तरह के रंगों से खुद क़ो रंग बिरंगा बना देना |

इस दुनिया में बनाने वाले ने कुछ भी बिना प्रयोज़न नहीं बनाया | हम ही सोचते हैं कि कोई कितने काम का है ? असल में कोई कितने काम का है ये तो बस उससे काम पड़े तभी पता चलता है |

सार ये है कि इन रंगों से, इन दियों से क्या है सीखने क़ो... क्या केवल एक दिन मनाये जाने वाले उत्सव हैं ये, इससे ज्यादा कुछ नहीं ?

सीखना है हमें कि कुछ दाग अच्छे होते हैं....... हैरान हो गए ना ये यकायक एड की बात ?

अरे भाई ! रंगों से खुद क़ो ऊपर से रंग बिरंगा बनाते हो, असल में तुम इसलिए आनंदित होते हों, ऐसा करके कि अलग अलग रंग और उनकी ख़ूबसूरती हमें आंतरिक प्रसन्नता देती है |

इंसान, भी तो ऐसे ही होते हैं कोई बहुत शांत स्वभाव का, बिल्कुल सफ़ेद रंग की तरह, कोई बहुत उग्र लाल रंग की तरह लेकिन हम इंसानों के अलग अलग रंगों से आनंदित नहीं होते....

बल्कि अक्सर सोचते हैं ये सफ़ेद वाला लाल जैसा क्यों नहीं... ये लाल वाला सफ़ेद जैसा क्यों नहीं ?

क्या रंगों के बारे में ऐसा सोचते हो? नहीं ना ! क्योंकि तुम जानते हो, जिंदगी भर भी सोचते रहो, कोशिश करते रहो तुम सफ़ेद क़ो लाल नहीं बना पाओगे | अंततः तुम्हें स्वीकार ही करना पड़ेगा तो क्यों ना हम स्वीकार करें एक दूसरे क़ो जैसे भी हम हैं और पूरे साल रंगों का मज़ा लें ?

इंसानों के बारे में क्यों ? केवल वो रंग में रंग देने की इच्छा है, जो रंग तुम्हें पसंद हो,

ईश्वर सिखाते हैं कि हर रंग खूबसूरत है तभी तो तितलियाँ बनाते समय हर रंग डाल दिया उन्होंने |

ईश्वर

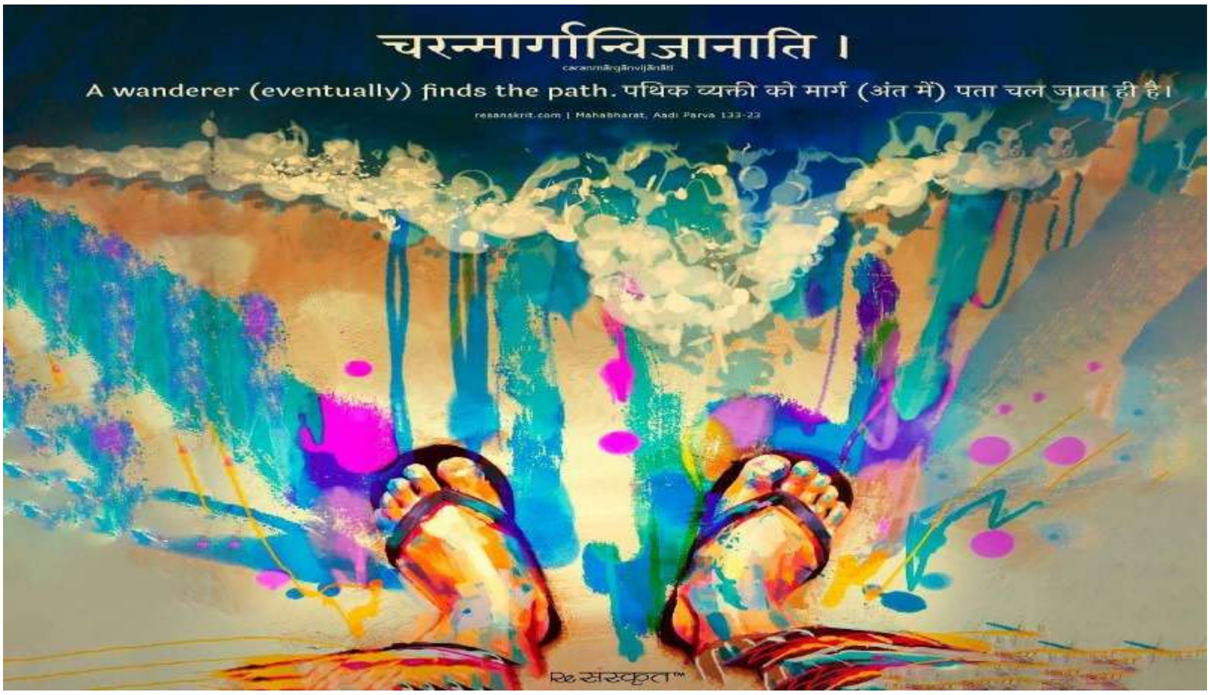

नहीं सिखाते ये अध्याय कि नीला अच्छा काला ख़राब | वो नहीं सिखाते कि पीला अच्छा लाल ख़राब | ईश्वर की सृष्टि में सब कुछ सुन्दर है | केवल एक ही चीज असुंदर बन गई है, इंसान का मन | बाकि सब सुन्दर है |

कड़वे शब्द भी अच्छे हैं ज़ब माँ बोलें, ज़ब पिता बोलें, ज़ब गुरु बोलें |

जीवन में आये हैं हम तो हर रंग क़ो जियें यही सार्थकता है इस जीवन की, कोई किसी का डुप्लीकेट नहीं बन सकता |

आपमें और दूसरे में बहुत अंतर होंगे, हर शब्द की परिभाषाएं अलग होंगी, अर्थ अलग होंगे लेकिन इन भांति भांति की विभिन्नताओं क़ो एक जैसा बनाने का प्रयास करने लगे तो हाथ खाली रह जायेंगे, रंग जिसका जैसा है वैसा ही रहेगा | और ऐसा क्यों है ये सोचते सोचते उम्र बीतती जाएगी |

स्वीकार कीजिये कि तुम एक रंग के और दूसरा किसी और रंग का है | आनंद लीजिये बिल्कुल उसी तरह जैसे होली पर अलग अलग रंगों का आनंद लेते हैं |

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

“साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सम्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में

ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति- दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।
अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेलःgoonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को --द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्ते :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।
रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।
यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- **प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!**

मार्च 2023

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
	लेख –		
1	रंगोत्सव	डॉ घनश्याम बादल	1 – 3
2	प्रेम और स्पर्श	डॉ शिवा धमेजा	4 – 6
3	एक अपराध का मनोविज्ञान क्या है		बृजेश कुमार	7 – 9
	कविता		
4	देवीय रूप नारी	गिरेंद्र भदौरिया प्राण	10 - 12
5	तितली रानी	प्रिया देवांगन	13
6	पिरामिड विधा कविता	समीर उपाध्याय	14 – 15
7	कर्ण अर्जुन संवाद	बृजेश कुमार	16 – 20
8	दोनों ओर प्रेम पलता है	मैथिलीशरण गुप्त	21 - 22
	लघु कथा		
9	खरीददारी	टिकेश्वर सिन्हा	23

	नारी अबला नहीं सबला है		
10	महाराणा प्रताप की बेटी चंपा		24 - 27
11	मुक्तक	संदीप मिश्र सरस	28 – 29
12	गजल	गिरेंद्र भदौरिया प्राण	30
13	निबंध		
	सफेदपोश अपराध		31 – 34
14	रोचक तथ्य		35 - 40

रंगोत्सव

डॉ घनश्याम बादल

होली आई रे कन्हाई, रंग बरसे ...

चैत्र एवं फागुन के महीनों की आहट आते ही फिर होली के रंग सिर चढ़कर बोलने लगते हैं। और वातावरण में -

चूनर भीगी, चोली भीगी, भीग गया हर अंग,

प्रीतम देखें दूर खड़े, देवर खेलै रंग,

गोरी नाचे ठुमक ठुमक बजते चंग और ढोल

देख-देख कर सास कुढ़े ,ननदी मारे बोल,

कि ऐसी आई होली.....

जैसे गीतों के स्वर घुल जाते हैं ।

होली का पर्व है ही ऐसा, जो, गृहस्थ ही नहीं, योगी,ध्यानी और ज्ञानीजनों के मन में भी प्रेम का रस घोल देता है। यदि चैत व फाल्गुन मास को मस्ती के महीने कहे जाते हैं, तो इसके पीछे सबसे बड़ी वजह है होली का त्यौहार।

चैत की पूर्णिमा के दिन, जब चांद यौवन पर होता है, तब अपने प्रीतम के दर्शन को तरसती किसी विरहन ने सजी-धजी प्रकृति को देखकर, सिसकारी भरी होगी, तब प्रकृति ने होली के रूप में उसे शीतलता देने के लिए रंगों की बौछार की होगी। शायद तब से ही चलन में आ गया होगा सराबोर कर देने वाला होली व फाग का पर्व ।

होलिका के पर्व को मनाने के लिए बड़ा कारण है, वसंत ऋतु का आगमन व प्रकृति का सुरम्य बनना । वसंत ऋतु के आगमन के साथ वसंत पंचमी के दिन होलिका का आधार रख दिया जाता है। अलग - अलग प्रदेशों में अलग-अलग ढंग से यह आधार स्थापना की जाती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पांच उपले रख कर , तो

राजस्थान के शेखावटी अंचल में 'प्रहलाद' के रूप में एक बड़ा मोटा डंडा गाड़ कर होलिका का आधार रखा जाता है।

फिर उत्तरप्रदेश की तरह ही ईंधन जमा किया जाता है और 'गींदड़' गाए जाते हैं। यह उत्सव पूरे एक सवा महीने तक चलता है। डांडिया से मिलता जुलता नृत्य 'घूमर' चौराहों और घरों के आंगनों में किया जाता है और मुंह में दो अलगोजे लेकर जब वातावरण में उनकी मधुर स्वर लहरी गूंजती है, तो पूरा वातावरण होलीमय हो उठता है।

हालांकि अन्य त्यौहारों की तरह होलिका पर्व का जश्न भी अब मुख्य रूप से उन्हीं अंचलों में रह गया है, जहां अभी भौतिक प्रगति के पांव पूरी तरह से नहीं जमे हैं।

शहरों से होलिका पर्व का प्राचीन सांस्कृतिक स्वरुप लगभग गायब हो गया है, लेकिन गांवों व दूरदराज के क्षेत्रों में आज भी होलिका पर्व की मस्ती व धूम बाकी है।

आज भी बृज की लठ्ठमार होली, बस्तर की पत्थरमार होली, हरियाणा की और कोड़ामार होली, राजस्थान की गाढ़े गुलाबी रंग की 'गैर', मथुरा की राधाकृष्ण होली व श्री आनन्दपुर साहिब का होला मुहल्ला मन को गहराइयों तक छू जाता है। आज के दिन से ही राजस्थान में गणगौर पूजा की शुरुआत भी होती है।

होली जैसे त्योहार विदेशों में भी मनाए जाते हैं, हॉलैंड में टमाटर मारकर, तो डेनमार्क में फूलों का उबटन मलकर जीवन में रंगों का महत्व प्रतिपादित किया जाता है। नेपाल, मॉरीशस, फिजी, थाइलैंड व गायना में तो होली व फाग के पर्व बिल्कुल भारत की तरह ही मनाए जाते हैं।

उत्तर भारत के गांवों में न केवल होली का पूजन होता है वरन रात में होली के गीत भी गाए जाते हैं। होली को सूत की डोर से बांधकर हल्दी, बेर, बताशे आदि से पूजा जाता है। रात्रि में शुभ लग्न में होलिका दहन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होलिका के दहन करने से मनुष्य के पाप उसकी अग्नि में जलकर भस्म हो जाते हैं । वहीं नए आने वाले अनाज की प्रथम आहुति अग्निदेव को अर्पित करते हैं।होली के दिन हर तरफ रंग, गुलाल, अबीर की धमक रहती है। गांवों में नई नवेली दुल्हन को रंगने की होड़ तो मचती ही है, देवर भाभी की ठिठोली भी देखते बनती है।

गलियों में उड़े रे गुलाल,कहियो रे मंगेजण से,

म्हारी रै मंगेजण चूनड़ हाली, गढ़िया हाला रे नवाब...

कहियो रे मंगेजण से..

जैसे अनेक लोकगीत होली पर झूमने को विवश कर देते हैं। लोकगीत ही नहीं फिल्मी गीत भी होली पर रंग बिखेरने आते हैं

होली के दिन दिल खिल जाते हैं,

रंगों में रंग रंग मिल जाते हैं... ।

और

रंग बरसे भीजे चूनर वाली,रंग बरसे....

तथा

जा रे जा दीवाने तू ,

होली के बहाने तू , छेड़ न मुझे मुझे बेशरम,....

ही नहीं

होली आई रे कन्हाई रंग बरसे , सुना दे मोहे बांसुरिया...

जैसे फिल्मी गीत भी होली पर सदाबहार गानों के रूप में याद किए जाते हैं ।

आज के दिन जाति, धर्म के सारे बंधन टूट जाते हैं। बिना किसी भेदभाव के रंगों से सराबोर करने की परंपरा जिंदा है, तो यह होली का ही कमाल है। यह रंजिश व वैर के भाव को धो डालने वाला पर्व भी है।

मगर एक बात और थोड़ी सावधानी जरूर रखिए और कहीं कुछ ऐसा न करिए न कहिए कि कोई आहत हो। क्योंकि होली खुशियां बांटने का त्योहार है इसमें मनोविकार और मनमुटाव जलाने से ही होली सार्थक होगी और धुलंडी के रंग तो चहकते महकते ही अच्छे लगते हैं । बेहतर हो कि होली में पुराने सारे गिले-शिकवे जलाकर राख कर दिए जाएं और उन पर प्रेम मस्ती सहिष्णुता तथा अपनेपन के रंग चढ़ाकर जीवन को रंगों से सराबोर कर दें ।

प्रेम और स्पर्श

का सम्बन्ध – कितना सही कितना गलत

डा शिवा धमेजा

कोई सम्बन्ध नहीं इनका, यह तो केवल एक मिथ्या धारणा है और इससे अधिक कुछ नहीं क्योंकि प्रेम की ऊंचाई का दूसरा कोई छोर ही नहीं होता जैसे ब्रह्माण्ड | प्रेम की गहराई कितनी होती है उसे नापना असंभव होता है, प्रेम छुआ नहीं जा सकता, प्रेम जीया जाता है |

प्रेम और स्पर्श ये प्रश्न केवल इसलिए उपस्थित हुआ है कि हम प्रेम क़ो शारीरिक सम्बन्ध मान लेते हैं जबकि प्रेम मानसिक सम्बन्ध है,| प्रेम वासना नहीं, प्रेम काम नहीं, प्रेम आलिंगन नहीं,

प्रेम पीड़ा है, प्रेम व्याकुलता है, प्रेम विश्वास है, प्रेम पूजा है |

शरीर क़ो छूना या सामाजिक अनुष्ठान सम्पन्न करके किये गए विवाह से संतानोत्पत्ति यौगिक क्रिया है ना कि प्रेम | प्रेम का संबंध आत्मा से होता है और आत्मा अपने ही भीतर होती है इससे फर्क नहीं पड़ता कि उसके शरीर क़ो स्पर्श किया या नहीं, वो कितनी दूर और कितनी पास है हमारे, वो है तो फिर व्यक्ति अपनी साँसों से नहीं जीता जिससे प्रेम करता है उससे जीता है

पुरुष और स्त्री के शारीरिक संबंधों क़ो अगर हम प्रेम मानते हैं तो इसका भी जवाब होगा कि प्राचीन काल में राजा महाराजा कई रानियाँ रखा करते थे, उनसे संतान प्राप्ति भी करते थे तो क्या सभी से प्रेम था या हो सकता है स्पष्ट है नहीं |

मानव के भीतर, शरीर की तृप्ति के लिए जिस प्रकार भूख उत्पन्न होती है और उसकी पूर्ति भोजन से की जा सकती है, उसी प्रकार उसकी कामेंन्द्रियों की तृप्ति के लिए, अपना वंश चलाने के लिए उसके भीतर शारीरिक संबंधों की आवश्यकता उत्पन्न होती है | व्यक्ति की इस तृप्ति की पूर्ति न हो पाने के कारण समाज में गलत कार्य ना हों इसी कारण विवाह नामक सामाजिक संस्था बनाई गयी, जिसके भीतर रहकर व्यक्ति अपनी काम वासना क़ो तृप्त कर सकता है |

अगर आप सहमत नहीं तो अर्थ यही है कि आप प्रेम के प्रति ईमानदार नहीं हो क्योंकि सत्य तो यही है कि प्रेम भीतर होता है जरूरी नहीं कि तुम जिससे विवाह करते हो उससे प्रेम भी करते हो, ये जरूर होता है कि तुम साथ होते हो, साथ रहते हो और साहचर्य में भी रहते हो लेकिन प्रेम करते हो ये जरूरी नहीं | प्रेम खुशबू है जिसे महसूस किया जा सकता है

प्रेम नज़ाकत है, प्रेम झुकी हुईं आँखों में है.. प्रेम खुद क़ो उस नाम से भर देने में हैं जिससे तुम्हें प्रेम है,

प्रेम तुमको उसके रूप में इस कदर बदल देता है कि आईने में वो दिखने लगता है, प्रेम तुम्हारी आँखों में दिखता है,

प्रेम क़ो स्पर्श से नहीं छुआ जा सकता, प्रेम तो अपने ही शरीर का हिस्सा बन जाता है यानि प्रेम तुम्हारी आत्मा हो जाता है |

तुम्हारी साँसों के चलने का आधार हो जाता है |

प्रेम अगर स्पर्श से होता तो मीरा और कृष्ण के प्रेम क़ो क्या कहते हम......

प्रेम स्वीकृति है, प्रेम उसकी ख़ुशी में तुम्हारी ख़ुशी है, प्रेम बिना छुए, बिना पास आये तुम्हें एक दूसरे के सबसे पास ले आता है जैसे तुम्हारी आत्मा..

प्रेम पारदर्शी बना देता है दोनों क़ो एक दूसरे के लिए, कुछ नहीं छुपता फिर, सब सुनाई देता है, बोलें या चुप रहे फिर भी बात होती है |

जैसे ही आप कहते हैं कि आप प्रेम करते हैं फिर आप, आप नहीं रह जाते, किसी क़ो पाते ही खुद क़ो खो देते हैं |

प्रेम और स्पर्श को हम इसप्रकार से समझ सकते है –

जैसे कि आत्मा का परमात्मा से संबंध | अर्थात यह प्रेम विशुद्ध प्रेम होता है इसमें मानसिक समर्पण ही सब कुछ है | इसमे व्यक्ति अपनी सुध बुध भूल कर अपने प्रियतम के अनुराग में डूबा रहता है | यह अनुराग ही उसे वास्तविक आनंद प्राप्त करता है | इसी आनंद की अनुभूति को ही वास्तविक रूप से प्रेम कहा जाता है|

इसलिए आम कहावत भी है –

" ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय|"

अर्थात प्रेम का अगर जिसने वास्तविक अर्थ समझ लिया है | उसने जीवन के वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर लिया है | यह वास्तविक प्रेम ही आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है | जिसके लिए बड़े-बड़े योगी संसार के समस्त भोगो को छोड़कर सच्चे आनंद की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं| यह प्रेम स्वार्थ से रहित होता है |

लेकिन आज समाज में प्रेम के नाम पर ना जाने क्या-क्या हो रहा है | प्रेम के नाम पर लोग केवल काम वासना की पूर्ति कर रहे हैं | जिससे केवल चारो ओर व्यभिचार पनप रहा है | अगर

यह प्रेम होता तो हमारी तृप्ती पूर्ण होती | लेकिन यह तो क्षणभंगुर सुख था जिसका पता ही नहीं चलता है कब आया, कब गया |

इसको वास्तविक अर्थ में स्पर्श कहा जा सकता है जिसको शरीर के द्वारा किया जा सकता है | केवल और केवल यह एक शारीरिक क्रिया है जिसको करने पर कुछ समय तो सुख मिल सकता है लेकिन हमेशा के लिए नहीं |

जबकि प्रेम तो आनंद का स्रोत है जो कभी मिटता ही नहीं | जो दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है यह कभी शारीरिक नहीं हो सकता | यह तो मानसिक रूप से समर्पण है |

इसलिए हम कह सकते हैं कि प्रेम एक सच्चा सुख है जिसमें मनुष्य दिन प्रतिदिन प्रगाढ आनंद को प्राप्त करता जाता है और हमेशा के लिए आनंदित रहता है |

जबकि स्पर्श तो क्षणभंगुर है जो अभी होगा थोड़े समय बाद नहीं |

एक अपराध का मनोविज्ञान क्या होता है |

बृजेश कुमार

समाज ने सभी लोगों को अच्छी तरह जीवन यापन करने तथा सुखी रहने के लिए कानून, नियम और कायदे बनाए हैं | जिससे सभी लोग नियमों का पालन करते हुए समाज तथा देश की उन्नति कर सकें | लेकिन जब व्यक्ति इन नियमों के विपरीत आचरण करने लगता है तो वह अपराध की श्रेणी में आ जाता है |

किसी भी देश का संविधान या समाज की नियमावली में लिखा होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए स्वतंत्र है | इसका मतलब यह है कि वह उस देश के संविधान तथा समाज की नियमावली को ध्यान में रखते हुए अपनी उन्नति करेगा, ना कि नियमों को तोड़कर | लेकिन जब व्यक्ति इन नियमावली को तोड़ देता है तो वह स्वतंत्र नहीं होता है | उस व्यक्ति को स्वच्छंद बोला जाता है | ऐसे व्यक्ति को समाज में अपराधी के रूप में देखा जाता है |

कई बार मनुष्य के सामने विपरीत परिस्थितियाँ मिलती है, जिससे वह उनका सामना ही नहीं कर पाता है और अपराध की दुनिया में कदम रख देता है| अगर हम अपराध के कारण को जानने लगे तो गरीबी इसका सबसे बड़ा कारण है | कहते भी हैं –

"बुभुक्षितम् किम् करोति न पापम् |"

अर्थात भूखा व्यक्ति क्या पाप नहीं करता | ऐसा व्यक्ति ना चाह करके भी पाप करने को आतुर हो जाता है |

आज अपराधी होने के कारण लालच, आक्रोश, ईर्ष्या, प्रतिशोध आदि हैं |

डॉ अल्फ्रेड एल्डर का कथन है :-" जिस व्यक्ति के मन में हीनता की मानसिक ग्रंथियां रहती हैं वह अनिवार्य रूप से अनेक प्रकार के अपराध करता है |"

कई बार आपने देखा होगा कि छोटे-छोटे बच्चे जो समाज तथा राष्ट्र के भविष्य हैं| उन्हें उनका बचपन ही नहीं मिल पाता है क्योंकि उनके सामने गरीबी एक शाप बनकर खड़ी होती है | इस गरीबी के वशीभूत होकर, फिर भौतिक जगत की वस्तुओं के पाने के आकर्षण में या किसी चीज को पाने के लोभ या लालच में व्यक्ति अपराध को चुन लेता है | इन अपराध के कारणों का पता लगाने तथा अपराधी के मन की बात को जानना ही मनोविज्ञान कहलाता है |

मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अनुशासन है जिससे व्यक्ति के मन में उत्पन्न हुए विचारों को जानना होता है अर्थात मनुष्य के मन को जानना और उसकी स्थितियों का अध्ययन करना ही मनोविज्ञान है|

एक अपराध जगत में मनोविज्ञान की बहुत बड़ी भूमिका होती है | जिसके माध्यम से अपराधी के द्वारा भविष्य में होने वाली घटनाओं से बचा जा सकता है | जब अपराधी के दिमाग की गतिविधि को जान लिया जाता है तो हमें उसके कारण का पता चल जाता है| जिसके कारण वह अपराध कर रहा है | अतः हम कह सकते हैं कि अपराधी के मस्तिष्क को जान लेने के कारण अपराध को नियंत्रित किया जा सकता है |

अगर प्राचीन काल की बात करें तो अपराध के नियंत्रण के लिए वहां पर कठोर यातनाएं दी जाती थी| जिससे अपराधी भयभीत होकर अपराध ना करें और समाज में भय व्याप्त रहे |

लेकिन आधुनिक जगत में ऐसा नहीं होता है | क्योंकि अपराधी को मारकर अर्थात कठोर यातनाएं देकर हम अपराध को कम नहीं कर सकते | ऐसा करके तो हम अपराध को नहीं बल्कि अपराधी को ही समाप्त कर रहे हैं | जब तक हम अपराधी के कारण को नहीं जान पाएंगे तब तक हम पता ही नहीं चलेगा कि यह अपराध कहीं अनजाने में तो नहीं हुआ | कई बार ऐसी परिस्थितियां होती है कि कोई व्यक्ति मानसिक विक्षिप्त हो तथा जिसका अभी भी मानसिक विकास ही पूर्ण

न हुआ हो, तो ऐसी स्थिति में हम अपराधी को कठोर यातनाएं देकर हम कहां का न्याय कर रहे हैं|

इसके लिए मनोविज्ञान ही ऐसा साधन है जिससे हम अपराधी के कारण को जानकर और उसे सुधार गृह में भेज सकते हैं | लेकिन जो आदतन अपराधी हैं उन्हें कठोर दंडित किया जाए |

अगर एक सामान्य अपराधी कारावास में जाकर आदतन अपराधियों से मिलेगा तो वह भी आदतन अपराधी ही बन जाएगा | क्योंकि कहा भी गया है :-

"कोयले की दलाली में हाथ काले ही होते हैं |"

एक मनोविज्ञान ही है जो सामान्य अपराध के कारण को जानकार, उसे अपराध मुक्त किया जा सकता है | वह समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में भागीदारी बन सकता है |

मनोविज्ञान चिकित्सा एक ऐसी पद्धति है जो न केवल अतीत की स्मृतियों तक पहुंचाती है अपितु उससे संबंधित परेशानियों से मुक्ति भी प्राप्त की जा सकती है | अगर हम कहे कि मनोविज्ञान क्या है? तो यह कहना बिल्कुल ठीक है कि मनोविज्ञान एक कानूनी ढांचे से परिपूर्ण दिशा में एक कदम है जो कि यह बताता है कि अपराधों को मनोविज्ञान के बिना आसानी से नहीं सुलझाया जा सकता | यह प्रक्रिया अपराध को सुलझाने मे बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है |

दैवीय रूप नारी

गिरेन्द्र सिंह 'भदौरिया'

जो प्रेमशक्ति की मायावी ,
जाया बनकर उतरी जग में।
आह्लाद बढ़ाती हुई बढ़ी ,
बनकर छाया छतरी मग में।।

बलिदान त्याग की महामूर्ति ,
ममता की सागर धैर्यव्रता।
करुणाकरिणी दैवीय दीप्ति,
साहस की जननी शान्ति सुता।।

हे विनयशालिनी युगमुग्धा,
भू भुवनमोहिनी प्रियंवदा।
रागानुरागिणी कनक काय,
परपोषी तोषी अलंवदा।।

नारी के मन की कोमलता,
कमनीय देह के आकर्षण।

मधुरिम सुर नयनों के कटाक्ष,
लज्जा के मृदु हर्षण-वर्षण।।

उद्दाम - काम उन्मत्त - प्रेम,
दुर्दम्य ललक का विकट जाल।
उस पर प्रजनन का दिव्य कोष,
पौरुष को कर देता निढाल।।

इस तन का मादा रूप देख,
दुनिया ने नारी नाम दिया।
नर ने भी जीवन शक्ति समझ,
अर्द्धांग मान कर थाम लिया।।

नारी के गुण ही नारी को,
दुर्बल या सबल बनाते हैं।
इनके कारण ही नर - नारी,
दोनों सम्बल बन जाते हैं।।

नारी के गुण के कारण ही,
नर नरपिशाच बन जाता है।
नारी के गुण के कारण ही,

नर नारिदास बन जाता है।।

नारी के गुण के कारण ही,
रण भीषण हुए जमाने में।
नारी के गुण के कारण ही,
टल गये युद्ध अनजाने में।।

नारी नर की है प्राण शक्ति,
दोनों की प्रेम पगी डोरी।
नारी नर की है शक्ति भक्ति,
नारी ही नर की कमजोरी।।

दोनों दोनों के हैं पूरक ,
दोनों दोनों के हितकारी।
कोई भी छोटा बड़ा नहीं,
नारी भारी नर भी भारी।।

"तितली रानी"

प्रिया देवांगन "प्रियू"

देखो तितली रानी आयी।
नील गगन में पँख फैलायी।।
नीली पीली भूरी काली।
कुछ तितली हैं कितनी लाली!!

छोटी छोटी आँखें होती।
इन आँखों से स्वप्न सँजोती।।
सुंदर सुंदर डाली डाली।
और कभी लगती मतवाली।।

पुष्प रसों का सेवन करती।
तनिक पेट अपना वह भरती।।
मीठी मीठी बोले बानी।
सुनो ध्यान से सभी कहानी।।

स्पर्श करो तो वह डर जाती।
नाखुश होकर फिर उड़ जाती।।
तितली रानी बड़ी सयानी।।
दिनभर करती है मनमानी।।

वर्ण पिरामिड विधा

होली

समीर उपाध्याय

हाँ

भव्य

संसार

मनोहार

फाग आसार

चाँदनी विस्तार

भेदभाव संहार

मिलन हृदय तार

आबालवृद्ध किलकार

नगाड़ा डफ़ली चमत्कार

सुर ताल संग गीत बहार

फागुन आयो रे! आनंद उद्गार

युव जन खेले रंग हस्त पसार

चहुंओर रंगीन पिचकारी फुव्वार

खजूर मुनक्का चना बताशा पोषाहार

कफ जन्य सर्व रोग पूर्णतया परिहार

काष्ठ प्रज्वलन संग विकार अग्निसंस्कार

प्रेरणादायी जीवन संदेश होली पर्व त्योहार।

भ्रमर

हाँ

लघु

सजीव

श्याम तन

पंख नंदन

सुमन आसान

चंचल चितवन

पराग रज व्यंजन

आह्लादक रस चूसन

प्राकृतिक सौंदर्य जतन

नव प्राण संचार चमन

महा संकेत वसंत आगमन

प्रेमी जन उर प्रणय संवर्धन

भ्रमर दैवीय संगीतकार मंचन।

कर्ण -अर्जुन युद्ध संवाद

ज़ब महाभारत के युद्ध मे गुरु द्रोण वीरगति को प्राप्त हो गये, तब कौरव सेना का सेनानायक कर्ण को बनाया गया!इससे आगे कविता शुरू होती है –

कर्ण बना सेनानायक अब,

रन भीषण होना था!

एक ओर था रश्मि रथी,

दूजी ओर पार्थ खड़ा था,

चलते थे दिव्य अस्त्र रन मे,

एक दूजे के सम्मुख खडे थे,

मानो अब होना था निर्णय,

लाशो के अम्बार लगे थे,

तभी पार्थ ने गुस्से मे,

कर्ण पुत्र वृतसेन को मारा,

जैसे बदला लिया आज,

अभिमन्यु का सारा,

इधर कर्ण के चक्षु से,

आंसू की छड़ी लगी थी,

तभी कर्ण ने गुस्से में,

तरकश की ओर हाथ बढ़ाया,

बानों में लिपटे अश्वसेन को,

धनुष पर आ चढ़ाया,

यह देख सब विचलित हो गए,

तक्षक का बेटा पार्थ के प्राण हरेगा,

इस दृश्य को देख केशव ने,

मन में कुछ तनिक विचारा,

अश्वों को घुटनों के बल पर,

रथ को आज झुकाया,

तभी बाण पार्थ के कानों को,

छूकर निकला,

जैसे मानों काल आज,

मस्तक को छूकर निकला,

भयभीत पार्थ के कर से,

गाण्डीव आज गिरा था,

तब केशव मुस्करा कर बोले,

पार्थ विचलित तनिक न होना,

ज़ब तक रथ पर खड़ा स्वयं हूँ,

काल से भी ना डरना,

फिर से भीषण अस्त्र चल गए,

एक का मरना निश्चित था,

तभी कर्ण के सारथी शल्य ने,

रथ को भूमि में धसाया,

उतरा रश्मि रथी अब रथ से,

पहिये को ऊपर करने,

बोला कर्ण, पार्थ से अब,

ना तुम अब बाण चलाओ,

युद्ध नीति ना कहती है,

अब तो तनिक शरमाओ,

कुछ पार्थ बोलें उससे पहले केशव ने,

अपना व्यंग बाण चलाया,

कहा कहाँ गया था धर्म तुम्हारा,

चौसर की बीच सभा में,

अभिमन्यु को मारा तुमने,

मिलकर सब योद्धाओ ने,

धर्म और केवल नीति की,

आज याद तुमको आती है

उठा ओं गाण्डीव पार्थ अब तुम,

वध इसका कर डालो,

पूर्ण करो जो करी प्रतिज्ञा,

तनिक नहीं विचारों

तभी पार्थ ने बाण कर्ण की तरफ छोड़ा,

शीश काटकर रश्मि रथी का,

धड़ से अलग कर डाला !

बृजेश कुमार

दोनों ओर प्रेम पलता है |

मैथिलीशरण गुप्त

दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि, पतंग भी जलता है हा!
दीपक भी जलता है!

सीस हिलाकर दीपक कहता–
'बन्धु वृथा ही तू क्यों दहता?'
पर पतंग पड़ कर ही रहता
कितनी विह्वलता है!
दोनों ओर प्रेम पलता है।
बचकर हाय! पतंग मरे क्या?
प्रणय छोड़ कर प्राण धरे क्या?
जले नही तो मरा करे क्या?
क्या यह असफलता है!
दोनों ओर प्रेम पलता है।
कहता है पतंग मन मारे–
'तुम महान, मैं लघु, पर प्यारे,

क्या न मरण भी हाथ हमारे?

शरण किसे छलता है?'

दोनों ओर प्रेम पलता है।

दीपक के जलने में आली,

फिर भी है जीवन की लाली।

किन्तु पतंग-भाग्य-लिपि काली,

किसका वश चलता है?

दोनों ओर प्रेम पलता है।

जगती वणिग्वृत्ति है रखती,

उसे चाहती जिससे चखती;

काम नहीं, परिणाम निरखती।

मुझको ही खलता है।

दोनों ओर प्रेम पलता है।

खरीददारी

टिकेश्वर सिन्हा 'गब्दिवाला'

बुधवारी

मार्केट के रोड किनारे एक फलवाले ने ठेला लगाया था। बिक्री नहीं हो रही थी। ठेले के पास से जो भी गुजरता, फलवाला उसे बड़ी आशान्वित नजरों से देखता कि वह कुछ न कुछ खरीदेगा। फिर उदास हो जाता। आशा की किरणों को निराशा सदैव धुमिल करने प्रयासरत रहती है। शाम भी होने वाली थी। बस अब वह घर लौटने की तैयारी कर ही रहा था कि एक औरत आई। उसके दोनों हाथों में थैले थे। साथ में दो बच्चे भी। एक सेब का फल पकड़ते हुए पूछा- ' ऐ भैया, क्या भाव है सेब का ? '

' पचास रुपये पाव। आधा किलो का अस्सी रुपये लगेगा बहनजी। चखकर देख लीजिए। एक नंबर का सेब है। एक किलो तौल दूँ ?' फलवाले ने सेब काटकर छोटा सा टुकड़ा उस औरत को दिया। सेब चबाते हुए औरत बोली- ' और ये ग्रेप्स ? '

' तीस रुपये पाव। एक किलो का सौ लगाऊँगा। ' फलवाला अपना तराज़ू ठीक करने लगा।

' चीकू अच्छे से नहीं पके हैं, लगता है। ' एक-एक चीकू अपने दोनों बच्चों को पकड़ाते हुए औरत ने कहा- ' ठीक है , एक-एक किलो अनार और संतरा तौल दो। ' उसने केले पर भी एक नजर डाली।

फलवाला मन ही मन बड़ा खुश हुआ।पलड़े पर अनार चढ़ाने लगा। तभी औरत बोली कि मैंने तो अनार को चखा ही नहीं है। कैसा स्वाद है तो...? '

' लो बहनजी, चख कर देख लो। ' फलवाले ने चार-पाँच दाने दिये।

' उहूँ...हूँ..! बिल्कुल ही बेस्वाद है तेरा अनार। रहने दो...रहने दो...। संतरे भी तो ठीक नहीं दिख रहे हैं। ' जैसे ही औरत मुँह बिचकाते हुए आगे बढ़ी ; फलवाले के चेहरे पर एक कारुणिक भाव छा गया।

महाराणा प्रताप की पुत्री – चंपा

राजस्थान के वीर पुत्र - महाराणा प्रताप जिन के परिचय के बिना इतिहास के पन्ने अधूरे होंगे | जुलियन कैलेंडर के अनुसार इनका जन्म 9 मई 1540 क़ो हुआ और हिंदु पंचांग के अनुसार महाराणा प्रताप का जन्म तृतीया ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, 1597, विक्रम संवत में हुआ था | मेवाड़ के महाराणा प्रताप क़ो पातल के नाम से भी जाना जाता था, जो महाभारत के अर्जुन के नाम से पार्थ से बना है जिस नाम से श्री कृष्ण अर्जुन क़ो बुलाया करते थे |

समूचे राजस्थान में उनकी शौर्य गाथाएँ प्रचलित हैं | यहाँ की वीर भूमि पर बच्चा - बच्चा उनके शौर्य व साहस से प्रेरित होता है |

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप पर लिखी एक कविता कन्हैया लाल सेठिया द्वारा रचित है हे, ' हरे घास की रोटी' महाराणा प्रताप ही नहीं बल्कि उनकी बेटी वीरांगना चंपा की वीरता से भी हमें परिचित करवाती है |

'हरे घास री रोटी '

'अरे घास री रोटी ही , जद बन बिलावडो ले भाग्यो
नान्हो सो अमरियो चीख पड्यो,राणा रो सोयो दुख जाग्यो
अरे घास री रोटी ही
हुँ लड्यो घणो , हुँ सहयो घणो, मेवाडी मान बचावण न
हुँ पाछ नहि राखी रण में, बैरयां रो खून बहावण में
जद याद करुं हल्दीघाटी , नैणां म रक्त उतर आवै
सुख: दुख रो साथी चेतकडो , सुती सी हूंक जगा जावै
अरे घास री रोटी ही

वे ऐसे वीर और पराक्रमी व्यक्तित्व के धनी राजा थे, जिन्होंने मुग़ल सम्राट अकबर की अधीनता कभी स्वीकार नहीं की | उनकी पुत्री अपने पिता के गौरव के लिए स्वयं भी उनका प्रतिबिम्ब बनकर उनके साथ ख़डी रहीं | उन्होंने कभी झुकने नहीं दिया अपने पिता के सर क़ो |

आज, हम ऐसी ही धरती की शान, हमारे देश की वीरांगना बेटी चंपा की बारे में मुख्य बातें जानेंगे |

ज़ब मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने लगभग 20000 सैनिकों के साथ मुग़ल शहंशाह अकबर के 800000 हज़ार सैनिकों के साथ हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा | अकबर की सेना ज्यादा थी जिस वजह से युद्ध लड़ना कठिन हो गया | ऐसी स्थिति में महाराणा प्रताप ने पूरे परिवार के साथ जंगलों की शरण ली |

महाराणा प्रताप ने मुगलों की अधीनता क़ो स्वीकार नहीं किया | अपने परिवार व दोनों बच्चों के साथ वन - वन भटकते रहते थे | कई कई दिन उन्हें कंद मूल और घास की रोटियां खा कर बिताने होते थे | ये बात उस समय की है ज़ब महाराणा प्रताप की बेटी चंपा ग्यारह वरष की और उनके बेटे की उम्र अभी चार वर्ष हुईं थी | दोनों भाई बहन नदी के तट पर खेल रहे थे, कुछ देर में भाई क़ो भूख लगी, वह भूख से रोने लगा | चंपा अपने भाई क़ो भूख से रोता देख कर बहुत व्याकुल हो गई, उसे गोद में उठा कर कहानियाँ सुनाने लगी, फिर कभी अच्छे अच्छे

फूल चुनकर उसे माला बनाकर पहनाती | कुछ देर में चंपा का भाई भूखा ही उसकी गोद में ही सो गया |

एक दिन चंपा ने देखा उसके पिता चिंतित बैठे हैं, वह बोली पिताजी आप इस तरह उदास क्यों हैं? क्या चिंता कर रहें हैं ? महाराणा प्रताप भाव विभोर होकर बोलें -

बेटी ! और कोई बात नहीं, आज हमारे यहाँ एक अतिथि आ गए हैं, मैं सोच रहा था, उन्हें क्या खिलाऊँ ? दर पर आये अतिथि क़ो भूखा नहीं भेजना चाहिए |

आज ऐसा भी दिन आ गया कि चित्तौड़ के महाराणा के दर से कोई अतिथि भूखा चला जाये | चंपा बोली कि पिताजी आप चिंता ना करें,

चित्तौड़गढ़ के महाराणा के दर से अतिथि भूखा नहीं जायेगा, आपने जो मुझे दो रोटी दी थी, वह मैंने बचाकर रख ली थी, भाई के लिए, अभी वह सो रहा है | मुझे भूख नहीं है | आप उन रोटियों क़ो अतिथि क़ो दे दीजिये |

चंपा पत्थर के नीचे रखी रोटियों क़ो ले आई और उसने अपने पिता क़ो दे दी, थोड़ी सी चटनी के साथ वो रोटियां अतिथि क़ो खिला दी गई

अतिथि वह रोटियां खा कर चला गया लेकिन अब महाराणा प्रताप से अपने बच्चों का दुःख देखा नहीं गया | उन्होंने अकबर क़ो अधीनता स्वीकार करने के लिए एक पत्र लिखा |

बेटी चंपा क़ो दो - चार दिनों में तो रोटी मिलती थी, उसे भी वह भाई के लिए बचा बचा कर रख लेती थी | भूख से उसकी काया जीर्ण शीर्ण हो गई थी |

वह इतनी दुर्बल हो गई कि एक दिन उसके पिता उसे बोलें बेटी ¡ अब मुझसे तुम्हारा दुःख देखा नहीं जाता |

मैंने अकबर क़ो पत्र लिख दिया है,

चंपा बोली नहीं !,पिताजी आप ऐसा कैसे कर सकते हैं ? हमें मरने से बचाने के लिए आप अकबर के दास बनेंगे, आपको मेरी शपथ है, आप ऐसा ना करें, क्या हम कभी नहीं मरेंगे ?

आप अपने देश के सर क़ो नीचे मत होने दीजिये | ये शब्द कहकर, अपने पिताजी की गोद में ही चंपा ने प्राण त्याग दिए |

भारत की वीरांगनाओं ने देश की धरती क़ो पावन कर दिया है,

हमारा देश और ऐसी बेटियों के जन्म दाता क़ो हम शत शत नमन करते हैं | हर बेटी क़ो पिताजी के सर क़ो ऊँचा रखने के लिए कभी कोई समझौता नहीं करना चाहिए |

यही सीख देती है हमें महाराणा प्रताप की नन्ही बेटी जो उम्र में बहुत कम किन्तु कर्मों की ऊंचाई में बहुत बड़ी हो गई |

मुक्तक

(1)

चुप तो हूँ, लेकिन अपना मुँह खोल दिया तो क्या होगा ?
मैंने तेरी दुखती नब्ज़ टटोल दिया तो क्या होगा ?
मर्यादा में रहता हूँ तो मर्यादा में रहने दो,
विद्रोही होकर मैंने सच बोल दिया तो क्या होगा ?

(2)

कंठ गूंगा हो गया है शब्द बहरे हो गए हैं।
भाव की अभिव्यक्ति पर क्यों लाख पहरे हो गए हैं।
वेदना के गर्भ से ही जन्म कविता का हुआ है,
फिर कहो क्यों अश्रु पर प्रतिबंध गहरे हो गए हैं।

(3)

सांध्य का लघु दीप हूँ तो हूँ दिवस का मैं दिवाकर।
लेखनी इतिहास कितने लिख गई सान्निध्य पाकर।
शब्द हूँ मैं सत्य की अभिव्यक्ति करके ही रहूंगा
युग लगा दे सैकड़ों प्रतिबंध चाहे भावना पर।।

(4)

लिखना है तो मौन हो चुके अधरों पर संवाद लिखो।
गीले नयनों से झरते हर आंसू का उन्माद लिखो।
छिपी चीथड़ों में भूखी अंतड़ियों की भाषा लिख दो,
लिखना है तो दुखी हृदय की आहों का अनुवाद लिखो।।

(5)

लिखना है तो कुछ अतृप्त अधरों पर तृप्तित शांति लिखो।
किसी झोपडी की चौखट से जुडी व्यथा की क्लांति लिखो।।
कलमकार है शपथ आप गीले नयनों को स्वर देना,
सम्मोहित हो सृष्टि समूची, मानवधर्मी क्रांति लिखो।।

- संदीप मिश्र 'सरस'

ग़ज़ल

गिरेंद्र सिंह भदौरिया 'प्राण'

लोगों को चिन्ता है कैसे बाकी कल का जीवन निकले।।
ऐसे भटके हैं सब जैसे सुलझन में से उलझन निकले।।1।।

मैले कपड़ों में लिपटा तन हो सकता है कुछ मैला हो ,
पर निर्मल मन वालों तक के दाग़ दगीले दामन निकले।।2।।

मेरे ऊपर जान छिड़कने तक की जो कसमें खाते थे,
वक्त पड़ा तो वे ही मेरे प्राणों के धुर दुश्मन निकले।।3।।

फागुन जैसे झूमा करते कुछ भी काम न आए देवर,
सूखे साखे जेठ सरीखे जेठ बरसते सावन निकले।।4।।

औरों पर हँसने वालों ने तर्क दिए हँसना अच्छा है,
कविता बोल उठी ऐसा हो जिससे कुछ अपनापन निकले।।5।।

इतना माल दबा रक्खा था धरती के उन सन्दूकों में,
छत में लगने वाले काले कंकर तक भी कंचन निकले।।6।।

तकनीकी विद्या ने अनथक भूला बिसरा ज्ञान परोसा,
उँगली धरते ही गूगल से किस्से "प्राण" पुरातन निकले।।7।।

निबंध

सफ़ेदपोश अपराध

ऐसे लोग जो नैतिकता में विश्वास नहीं रख़ते, बिना किसी भय के अपनी आपराधिक गतिविधियां जारी रखते हैं, उन्हें सफ़ेद पोश अपराध कहा जाता है |

ई. एच. सदर लैंड वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने आपराधिक जगत में सफेदपोश अपराध की अवधारणा क़ो सन 1941, में स्थापित किया |

सदरलेंड अपने शब्दों में कहा कि समाज के सम्माननीय व्यक्तियों द्वारा उनके व्यवसाय के दौरान किये गए अपराधों क़ो सफ़ेद पोश कहा जाना चाहिए |

ऐसे कुछ अपराध जैसे – कपट पूर्ण विज्ञापनों द्वारा दुर्व्यपदेशन, कॉपीराइट या ट्रेड मार्क के नियमों का उल्लंघन |;

यदि कोई समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति, नकली माल बेचता है तो उसे सफ़ेद पोश अपराधी कहा जायेगा, लेकिन ज़ब यही माल किसी गिरोह द्वारा बेचा जाता है और खरीदने वाले क़ो जानकारी नहीं है तो इसे सफ़ेद पोश अपराध नहीं कहा जायेगा

सफ़ेद कॉलर क्राइम ऐसे अपराध नहीं हैं जो व्यक्ति विशेष पर प्रभाव डालें यही कारण है कि समाज इनके प्रति अधिक सचेत नहीं है | ऐसे अपराधी आसानी से बच भी निकलते हैं क्योंकि नकली माल, दुर्व्यपदेशन, कपट आदि पर क्रेता सावधान का सिद्धांत लागू होता है | यदि क्रेता, विक्रेता द्वारा किये गए धोखे का पता नहीं लगा पाता तो क्रेता, विक्रेता क़ो दोषी नहीं ठहरा सकेगा |

भारत में 1992 में घटित हर्षद मेहता कांड (प्रतिभूति कांड) सफेदपोश अपराधों का ज्वलंत उदाहरण है जिसने देश क़ो भारी आर्थिक संकट में डाल दिया | हमारे देश का दुर्भाग्य है कि बॉम्बे और अहमदाबाद में हर्षद मेहता फेन्स क्लब कायम हो गए हैं |

1995 में टेलिकॉम टेंडर कांड और 1996 के हवाला कांड, बिहार में पशुपालन विभाग द्वारा पशुओं का चारा खरीदने में देश पर सफ़ेद पोश अपराधों के कारण लगे काले दाग हैं |

सफ़ेद पोश अपराधों का निरंतर बढ़ना ये इंगित कर देता है कि जनता इन अपराधों के प्रति कितनी उदासीन है और देश के बुद्धि जीवी वर्गो के भीतर इस सम्बन्ध में कोई नैतिक व्याकुलता नज़र नहीं आतीं |

सफ़ेद पोश अपराधों के पनपने के कारण –

प्रथम तो ये कि ये अपराधी, विधि के दायरे में रहते हुए अपराध करते हैं तो अगर इन पर मुकदमा भी लाया जाये तो वह न्यायलय में वर्षों तक लंबित पड़ा रहता है |

दूसरे इन अपराधों का प्रभाव असंख्य लोगों पर पड़ता है, जिससे व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति क़ो नुकसानी नगन्य होती है |

समाज के व्यक्ति जानबूझ कर या अनजाने में इन अपराधों के घटित होने में योगदान देते हैं, अपने कामों क़ो सुगमता से करवाने के लिए रिश्वत देते हैं | मुनाफाखोरी, कालाबाज़ारी इन्हीं अपराधों के स्वरुप हैं |

इन अपराधों के सफेदपोश अपराधी अधिकांशतः प्रज्ञावान, कुलीन, दूरदर्शी, तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होते हैं, इनके विपरीत हिंसक अपराध निम्न वर्गीय लोगों द्वारा किये जाते हैं |

सफ़ेद पोश अपराधों में वृद्धि के कारण –

बीसवीं सदी में हैं हम, बहुत स्पष्ट है कि वैज्ञानिक प्रगति की है, तकनीकी प्रगति की है | एकाधिकार की प्रवृति बढ़ गयी है, समाज में विश्व व्यापी आर्थिक प्रगति हुईं है और परिणाम है कि सफ़ेद पोश अपराध अब सामान्य होने लगे हैं, आगे बढ़ने के लिए करना ही पड़ता है..

इस भावना की पुष्टि हो चुकी है | सफेदपोश अपराधियों की उच्च सामाजिक व आर्थिक प्रास्थिति ही इन अपराधों में वृद्धि का कारण है | ये इतने प्रभावशाली होते हैं कि अपने व्यवसाय में जो भी अवैध गतिविधियों क़ो करते हैं, बहुत चतुराई से करते हैं, इतनी सफाई से ये अपराध करते हैं कि अपकारित व्यक्ति क़ो पता ही नहीं चलता कि उसका शोषण हो रहा है | और अगर उसे अपने शोषित होने का पता भी चल जाये तो वह इसका विरोध नहीं कर पायेगा क्योंकि शोषण करने वाले का समाज में उच्च प्रभाव है |

समाज के इन वर्गों की न्याय प्रशासन के प्राधिकारियों से भी अच्छी खासी पहचान होती है तो न्यायधीश गण भी इनके प्रति उदारता बररतते हैं

साईबर अपराध, सफ़ेद पोश अपराधों का एक और प्रकार है, जो इस समय बहुत बढ़ गया है |

बैंकिंग सेवा, वित्तीय संस्थाएं, दूर संचार सेवाओं, परिवहन सेवा आदि साईबर अपराधों से प्रभावित हुए हैं |

इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि गत तीन दशकों में भारत में जो आर्थिक व औद्योगिक प्रगति हुईं है उसने सफ़ेद पोश अपराधियों क़ो एक अनुकूल वातावरण दे दिया है फलने फूलने के लिए | संथानम समिति ने भारत में व्यापारियों, उद्योगपतियों, ठेकेदार, लोक अधिकारियो द्वारा किये जाने वाले अपराधों का एक विस्तृत ब्यौरा दे दिया है |

संथानम के अतिरिक्त भ्रष्टाचार निवारण हेतु गठित आयोग ने अपने प्रतिवेदन (1964) में सफ़ेद पोश अपराधों के स्वरुप क़ो रेखांकित किया है | इस आयोग ने सफ़ेद पोश अपराधों का आठ श्रेणियों में वर्गीकरण किया |

वर्तमान समय में निम्न सफेदपोश अपराध देश में अपनी जड़ें फैला चुके हैं –

जमाखोरी, काला बाज़ारी, मिलावट, करों की चोरी, चिकित्सा के क्षेत्र में सफेदपोश अपराध, अभियांत्रिकी व्यवसाय, विधि व्यवसाय, शैक्षणिक क्षेत्र में सफेदपोश अपराध, व्यापार जगत के सफेदपोश अपराध, कंप्यूटर से सम्बन्धित सफेदपोश अपराध मनी लॉन्डरिंग आदि |

सफेदपोश अपराधों के लिए उपचार –

भारत देश में अशिक्षा और निर्धनता के कारण अपराध बहुत होते हैं | न्याय प्रणाली के लिए अपराध निवारण एक समस्या बन चुकी है फिर भी निम्न कुछ उपायों क़ो रोकथाम के लिए अपनाया जा सकता है –

- लोकचेतना जागृत करना, विधिक साक्षरता अभियान चलाना जिस के लिए टी. वी., फ़िल्म, रंग मंच माध्यमों का प्रयोग किया जा सकता है |
- सफेदपोश अपराधों की सुनवाई के लिए विशेष अधिकरण गठित किये जाएं जिन्हें पाँच वर्ष तक की सजा देने की अधिकारिता हो |
- इन अपराधों के लिए सख्त कानूनी प्रावधान होने चाहिए, गंभीरतम दंड व्यवस्था होनी चाहिए ताकि लोग इन अपराधों क़ो करने से डरेंगे और परावृत्त रहेंगे |
- भारत के द्वितीय राष्ट्र पति डॉ सर्व पल्ली राधाकृष्णन ने लिखा है कि जमाखोरी, काला बाज़ारी या सट्टा खोरी जैसे सफेदपोश एवं सामाजिक, आर्थिक अपराधों में लिप्त अपराधी देश के लिए घातक शत्रु हैं

समाज में स्वस्थ वातावरण के लिए जो भी प्रयास हो यदि वो जड़ से हो तभी कुछ परिवर्तन ऐसे आएंगे जो स्थाई होंगे, न्यायलय की जरूरत तब पड़ती है ज़ब अपराध हो गए उन्हें रोकना है लेकिन अपराध क़ो जड़ से रोकने के लिए समाज में स्वस्थ परिवेश की जरूरत होगी | सरकार के प्रयास अच्छी, सस्ती शिक्षा के होने चाहिए और युवा वर्ग क़ो केवल नौकरी पर निर्भर ना

होकर अपने खुद के व्यवसाय पर बल देना चाहिए जिससे कि गरीबी या अभाव के कारण कोई भी व्यक्ति अपराध की ओर ना बढ़े |

रोचक तथ्य

J K BEHERA SINDHU
मैड्रक एकमात्र ऐसा पौधा हैं जिसकी शक्ल इंसान से मिलती हैं तथा इसे काटने पर अन्दर से बच्चे के रोने की आवाज आती हैं । यह पौधा अफ्रीका में पाया जाता हैं ।

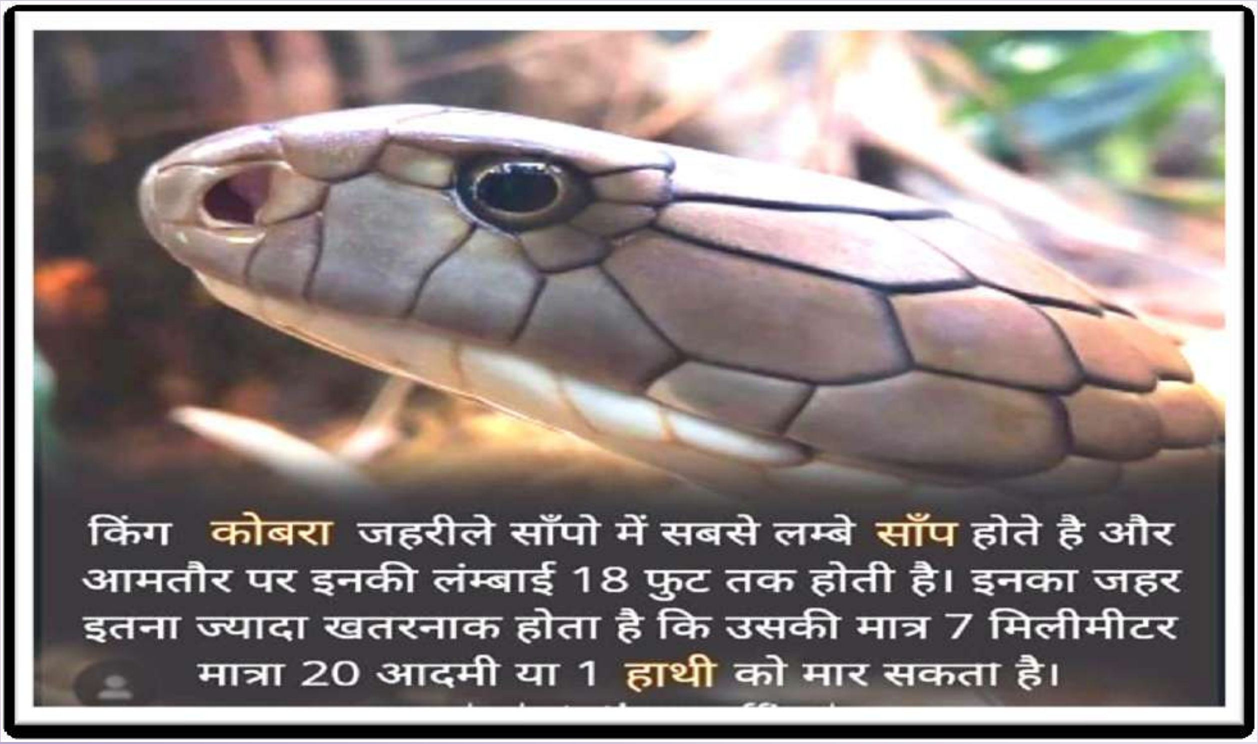
किंग कोबरा जहरीले साँपो में सबसे लम्बे साँप होते है और आमतौर पर इनकी लंम्बाई 18 फुट तक होती है। इनका जहर इतना ज्यादा खतरनाक होता है कि उसकी मात्र 7 मिलीमीटर मात्रा 20 आदमी या 1 हाथी को मार सकता है।

fb- insta - hindikathya
दुनिया मे सबसे पुराना जीवित वृक्ष कैलिफ़ोर्निया में है, जो 4,843 वर्ष पुराना है।

follow @fact_mentors
पीपल एक ऐसा पेड़ है जो रात के समय आक्सीजन देता है और सभी पेड़ों से ज्यादा देता है।

Want to Know Facts ?
Leech नाम के छोटे से कीडे में
32 दिमाग होते हैं और इस कीडे
का काम सिर्फ़ खून चुसना है।

CLICK
Here for
Fact Tracker
FACT TRACKER FT
बनाना पाइथन एक ऐसा सांप है, जो
बिल्कुल केले के जैसे दिखता है। आप
पहली बार मैं इसको देख कर बता
नहीं सकते कि यह केला है या सांप।

गजब तथ्य
Insta|@gajabtathya_official
आंध्र प्रदेश के शैलम वन में पाया जाने वाला यह "हनुमंत बीरा" नामक पौधा जिस पर हनुमान जी की तस्वीर देखने को मिलती है। यह दुर्लभ पौधा केवल भारत के शैलम वन में ही देखने को मिलता है।

औसतन चार साल का बच्चा एक दिन में 400 से अधिक सवाल पूछता है।

Rat
mouse
www.jeendagi.in
Rat vs Mouse
जो चून्हे साइज में बड़े होते हे
उन्हें rat कहा जाता हे और जो
चूहे साइज में छोटे होते हे उन्हें
mouse कहा जाता हे ।

Google Mirror
Underwater
T-Rex Game
Pac-man
Guitar
Snake Game
IP Location
Bing Mirror
FACT MENTORS
Find the search bar and search something
यदि आप google में google mirror
लिख कर सर्च करोगे तो आपको सभी चीजे
उल्टी ही दिखेंगी क्योंकि google mirror
के जैसा व्यवहार करने लगता हैं ।

भारत की आज़ादी से चार दशक पहले, साल 1907 में विदेश में पहली बार भारत का झंडा एक औरत ने फहराया था। जिनका नाम भीकाजी कामा था।

BANK OF INDIA
भारतीय रिज़र्व बैंक
I PROMISE TO PAY THE BEARER THE SUM OF ONE HUNDRED RUPEES
100
मैं धारक को एक सौ रुपये अदा करने का वचन देता हूँ।
मनमोहन सिंह एक मात्र प्रधानमंत्री है जिनके हस्ताक्षर भारतीय नोटो पर भी थे क्योंकि प्रधानमंत्री बनने से पहले मनमोहन सिंह रिजर्व बैंक के गवर्नर भी रह चुके हैं।

धन्यवाद

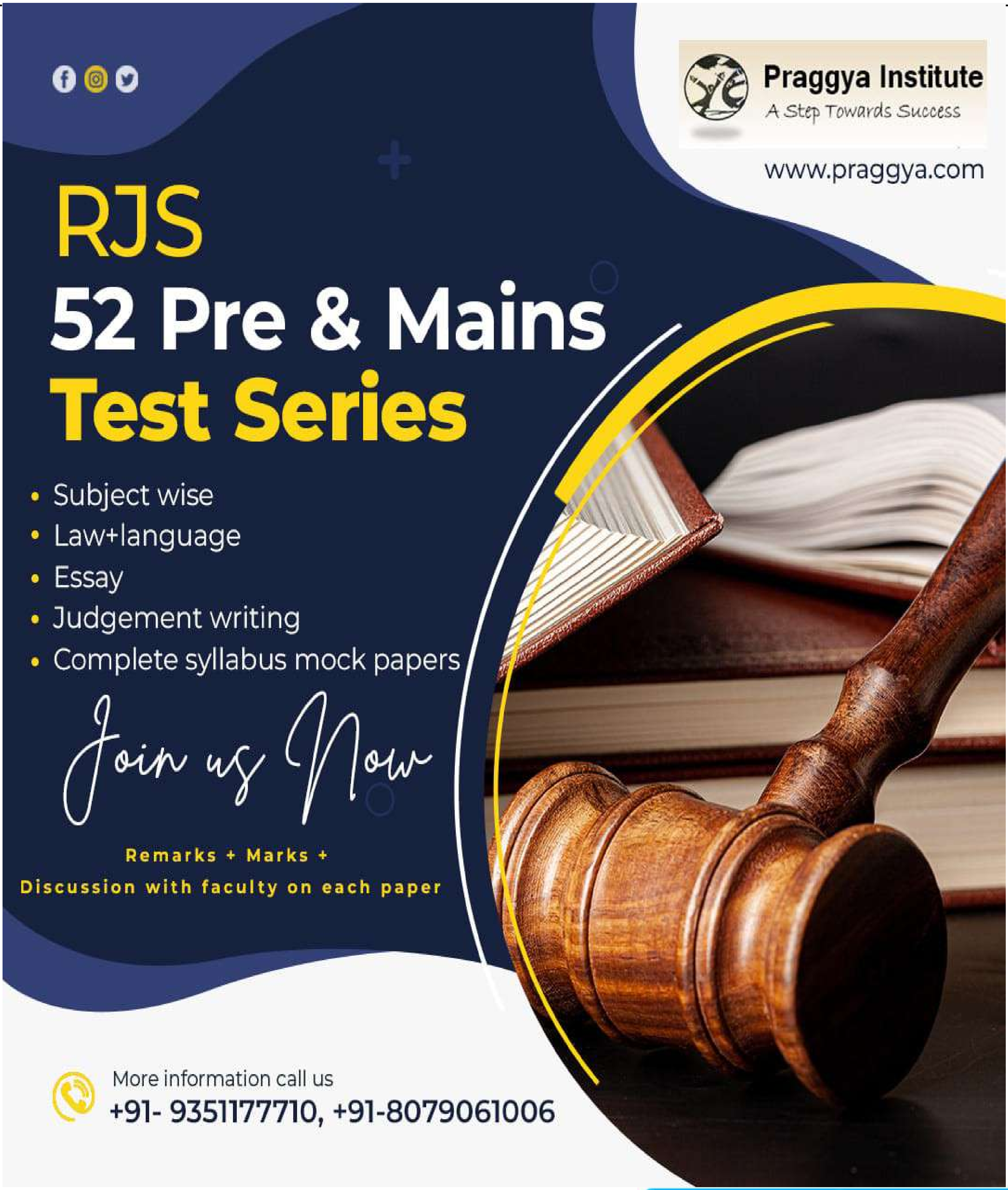
Praggya Institute
A Step Towards Success
www.praggya.com
RJS
52 Pre & Mains
Test Series
• Subject wise
• Law+language
• Essay
• Judgement writing
• Complete syllabus mock papers
Join us Now
Remarks + Marks +
Discussion with faculty on each paper
More information call us
+91- 9351177710, +91-8079061006

Website: www.praggya.com
Praggya Institute
A Step Towards Success
RJS Online
Recorded Course
6 time revision
* 121 pre test series free
+91-9351177710
+91-8079061006
pragya.rjs@gmail.com

FUTURE DIVINE

FOR LL.B. STUDENTS

WEEKEND COURSE OF JUDICIAL CLASSES

PRE + MAINS + INTERVIEW + PRE AND MAINS TEST SERIES

(SATURDAY AND SUNDAY)

VISIT US

More info
+91- 8955480471

futuredvn01@gmail.com

मार्च अंक 2023 के लेखक परिचय

- गिरेंद्र सिंह भदौरिया

  prankavi@gmail.com

  9424044284

  6265196070

  पता :- वृत्तायन 957 स्कीम नंबर 51

  इंदौर मध्य प्रदेश पिन :-452006

- डॉ घनश्याम बादल

  215, पुष्परचना, गोविंद नगर

  रुड़की

  9412903681

  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार

  Aryabrijeshsahu24@gmail.com

  9785837924

  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.

  321023

- प्रिया देवांगन “प्रियू”

  राजिम

  जिला -गरियाबंद

छत्तीसगढ़

Priyadewangan1997@gmail.com

- संदीप मिश्र ‘सरस’

  कवि,साहित्यकार/समीक्षक

  संस्थापक/अध्यक्ष-साहित्य सृजन संस्थान

  साहित्य सम्पादक-दैनिक राष्ट्र राज्य

  पता-मोहल्ला-शंकरगंज,पोस्ट-बिसवां,जिला-सीतापुर(उ प्र)-(पिन-261201)

  मोबा9450382515-वॉट्सऐप/वार्ता9140098712-वार्ता

  Sandeep.mishra.saras@gmail.com

- समीर उपाध्याय

  मनहर पार्क : 96/ए चोटिला

  जिला सुरेंद्रनगर

  गुजरात

  भारत

  9265717398

  S.I.upadhyay1975@gmail.com

- डॉ शिवा धमेजा

  Drshivadhameja01@gmail.Com

  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

  9351904104

- टीकेश्वर सिन्हा ‘ गब्दीवाला ‘

घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)
सम्पर्क : 9753269282.
Tikeshwarsinha221073@gmail.com

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

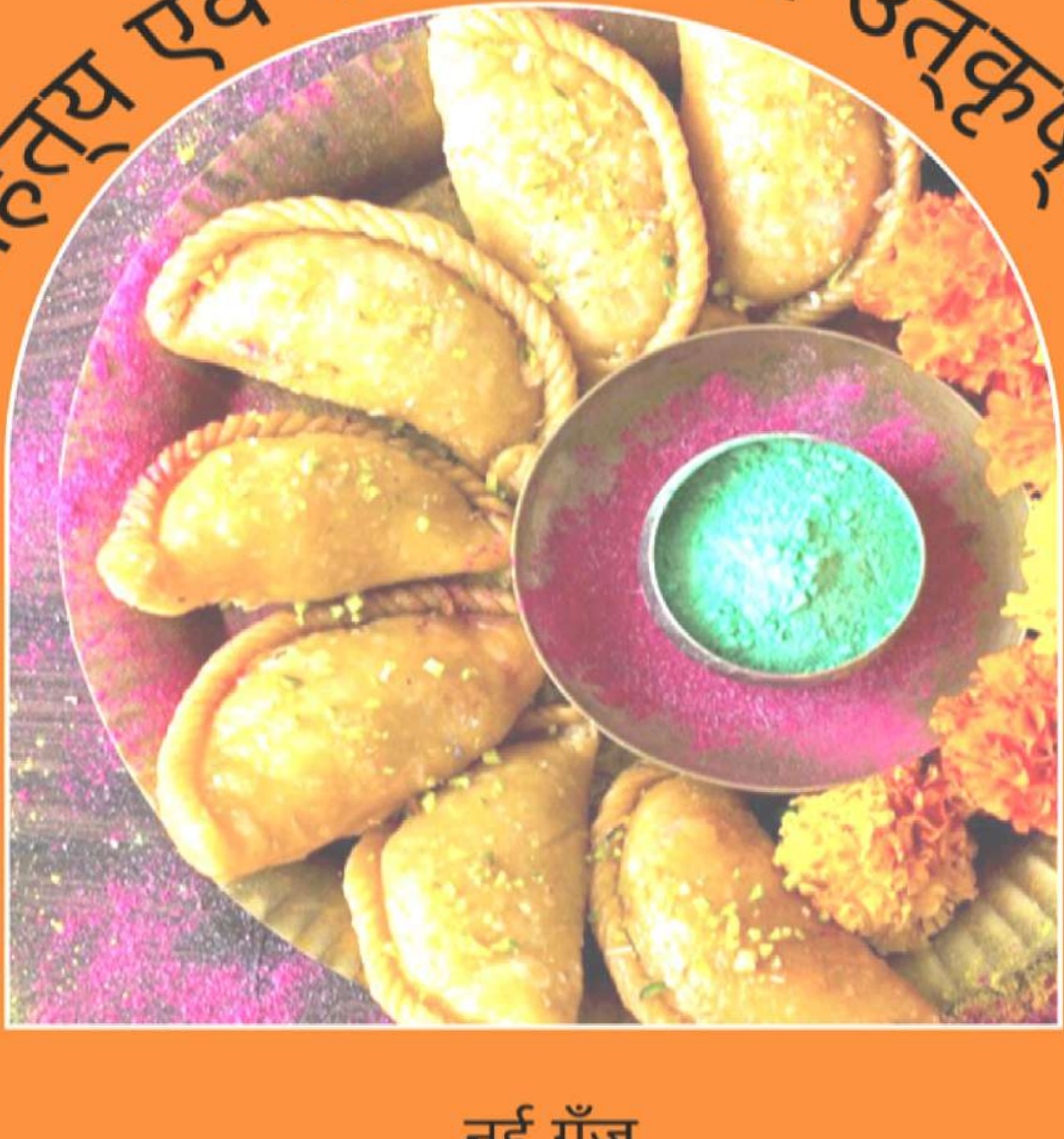

नई गूँज

Design by -rahul deewan

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924